ग्रहों के साथ हो तो चन्द्रमा का नतिसंस्कृत शर का ग्रहण करें। सामान्य शर का नहीं और वह शर जिस दिशा का हो, तो उस ग्रह को भी उसी दिशा का समझें। अर्थात जिस ग्रह के शर की दिशा उत्तर हो तो वह ग्रह भी उत्तर दिशा का हो जाता है। यदि शर दक्षिण दिशा का हो तो उस ग्रह को भी दक्षिण दिशा का समझें।

यदि दोनों ग्रहों की दिशा एक ही आ रही हो, तो जिस ग्रह का शर कम हो उस ग्रह को अधिक शरवाले ग्रह की दिशा से दूसरी दिशा का समझें। यदि ग्रहों के शर एक ही दिशा के हों तो उन शरों का अन्तर करें (परस्पर एक दुसरे में से घटा दें)। यदि ग्रहों के शर भिन्न दिशाओं के हों, तो उन शरों का योग कर लें, तब उन ग्रहों के मध्य में दक्षिणोत्तर अंगुलात्मक अन्तर होता है। उसके पश्चात यदि ग्रहबिम्बों का ऐक्य होगा और यदि दक्षिणोत्तर अन्तर अधिक हो तो ग्रहबिम्बों का ऐक्य नहीं होगा। ऐसी स्थिती में लम्बनादि गणित करने की आवश्यकता नही है? क्योंकि ग्रह का स्वल्पबिम्ब होने के कारण ग्रह और बिम्ब का भेद स्पष्ट न दिखलायी देने के कारण यह नहीं किया जाता।

डॉ० सुदिवट कुमार
सहा०प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

ग्रहलाघवम्

पाताधिकारः   शास्त्री-III

व्यतीपातवैधृत्योर्विवेकः—

नन्दघ्नायनभागयुक्तघटिकोनाः सार्द्धविश्वे तथा
तारास्तावति साग्रयोगविगमे पातो व्यतीपातकः।
ज्ञेयो वैधृतिरत्र यातघटिकाः सर्वर्क्षनाडीहताः
स्पष्टयाः स्युः शरषड्हृता इह तमोऽर्कौ सायनांशौ कुरु॥

अन्वयः— सार्द्धविश्वे तथा ताराः नन्दघ्नायन भाग-तुल्यघटिकोनाः तावति साग्रयोगविगमे व्यतीपातकः वैधृतिः च पातः ज्ञेयः। अत्र यात घटिकाः सर्वर्क्षनाडीहताः शरषड्हृताः स्पष्टयः स्युः। इह तमोऽर्कौ सायनांशौ कुरु।

तारा— सार्द्धविश्वे सार्द्धत्रयोदशसंख्याके १३।३० तथा ताराः २८, नन्दघ्नायनभागतुल्यघटिकोनाः नवगुणितायनांश-समघटिकाहीनाः, तावति, साग्रयोगविगमे साकव्ययोगे गते सति, व्यतीपातकः वैधृतिश्च पातः ज्ञेयः। अस्यायमभावः— सार्द्धत्रयोदशसमाने व्यतीपातः, सप्तविंशतितुल्ये वैधृतिनामकः पातो भवति। अत्र यातघटिकाः योगस्य गतघटिकाः सर्वर्क्षनाडीहताः भभोगघटीभिर्गुणिताः, शरषड्हृताः पञ्चषष्टिभक्ताः, स्पष्टयः स्युः। इह पातसाधनावसरे तमोऽर्कौ राहुसूर्यौ, सायनांशौ अयनांशयुक्तौ कुरु विधेहि।

भावार्थ:— अयनांशों को ९ से गुणा करें। जो घटी आदि गुणनफल मिले, उसको १३ योग और ३० घटी में से घटाएँ। जो शेष रहे उसके बराबर जब योगादि होगा, तब व्यतीपात योग होगा। पहले कहे हुए गुणनफल को २८ योगों में से घटाएँ। जो शेष रहे उसके बराबर योगादि जब होगा, तब वैधृतिपात योग होगा। तदनन्तर अभीष्ट पातयोग की घटी और पल को इष्टदिन के नक्षत्र की गतैष्य घटिकाओं से गुणा करें, जो गुणनफल हो, उसमें ६५ का भाग दें। जो लब्धि मिले, वह उस अपने पातयोग की घटी होती है।

ग्रहलाघवम्

ग्रहयुत्यधिकारः शास्त्री-III

Date 14.12.20
Page 1

ग्रहयोर्दक्षिणोत्तरसंस्थानान्तरज्ञानप्रकारः —

चाल्यौ खेटौ समौ स्तो ग्रहयुतिदिवसैश्चन्द्रबाणः स्वनत्या
संस्कार्योऽत्र ग्रहौ स्वेषु दिशि समदिशोस्त्वल्पबाणः परस्याम्।
एकान्याशौ यदेषु विरहितसहितौ खेटमध्येऽन्तरं स्याद्भेदो
मानैक्यखण्डादिह लघुनि तदाऽल्पं हि किं लम्बनाद्यम्॥

अन्वयः— ग्रहयुतिदिवसैः खेटौ चाल्यौ, समौ स्तः, चन्द्रबाणः, स्वनत्या संस्कार्यः अत्र ग्रहौ स्वेषु दिशि, समदिशोः तु अल्पबाणः परस्यां यदा इषू एकान्याशौ विरहित सहितौ खेटमध्ये अन्तर स्यात् इह मानैक्यखण्डात् लघुनि भेदः, तदा हि अल्पं लम्बनाद्यं किम्।

टीका— पूर्वसाधितैः, ग्रहयुतिदिवसैः खेटौ ग्रहौ चाल्यौ भवतः, तौ समौ समानराश्यंशादिकौ स्तः, तयोः शरः साध्यः, चन्द्रबाणः चेत् तदा स्वनत्या संस्कार्यः, अत्र ग्रहौ स्वेषु दिशि स्व-स्वशरदिशि, भवतः। तद्यथा— यस्य ग्रहस्योत्तरशरः स उत्तरस्यां दिशि, यस्य दक्षिणशरः स दक्षिणस्यां दिशि, इत्यवधेयम्। समदिशोः समानदिग्वतोर्ग्रहयोः तु अल्पबाणः स्वल्पशरोग्रहः, अपरस्याम् अधिकशराद् अन्यद्दिशि, स्यात्। यदा इषू शरौ, एकान्याशौ तदा विरहितसहितौ हीनयुक्तौ कार्यौ, तदा खेटमध्ये अङ्गुलाद्यम् अन्तरं स्यात्। इह अस्मिन् अन्तरे, मानैक्यखण्डात् लघुनि, अल्पे सति, भेदः स्यात्, तदा हि अल्पं लम्बनाद्यं किं कर्तव्यमिति शेषः। यतस्तस्य स्वल्पबिम्बत्वात् ग्रहबिम्बयोर्भेदः सम्यग् दृशो-विषयतां नोपयाति।

भावार्थः— ग्रहयुति के जो गत अथवा गम्य (बीते अथवा आनेवाले) दिन हों, उसी प्रकार उन युति के दिनों का चालन ग्रहों में ऋण अथवा धन करने से वे ग्रह राशि आदि के बराबर होंगे, तदनन्तर उन ग्रहों के शरसाधन करें। परन्तु जब चन्द्रमा की युति अन्य

P.T.O